



Original Article

नयी सदी के स्वर में चित्रित समस्यामूलक विमर्श

डॉ. दीपक रामा तुपे

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग

विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर (अधिकारप्रदत्त स्वशासी संस्था)

Manuscript ID:

IJAAR-C130336

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 177 - 183

Submitted: 27 Jan.2026

Revised: 03 Feb. 2026

Accepted: 10 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

डॉ. दीपक रामा तुपे

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22785922

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22785922>



Creative Commons



सार:

हीरालाल मिश्र 'मधुकर' द्वारा संपादित 'नयी सदी के स्वर' की कविताओं में विविध समस्यामूलक विमर्श की पहल की गई है। प्रस्तुत काव्य संकलन में कन्या भ्रण हत्या, श्रमिक समस्या, भूखमरी की समस्या, भ्रष्टाचार की समस्या, पर्यावरण की समस्या, शोषण की समस्या आदि समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है। दहेज प्रथा और आर्थिक असुरक्षा के कारण गर्भ में पल रही बच्ची की हत्या की जा रही है जिसके कारण समाज में स्त्री-पुरुष का संतुलन बिगड़ता जा रहा है। राजनेता मजदूरों का उपयोग अपनी सभा सजाने के लिए कर रहे हैं। उसी सभा में वे मजदूरों को हर सुविधा देने की घोषणाबाजी करते हैं, मगर वह पूरी नहीं करते; जिसके कारण मजदूरों के जीवन में कोई बदलाव नहीं आता। भूखमरी के कारण बच्चों का बिलबिलाना किसी माँ को देखा नहीं जाता। उनके पेट की आग बुझाने के लिए औरत शर्म-ओ-हया हो रही है। बढ़ती आबादी, औद्योगीकरण, शहरीकरण, प्राकृतिक संसाधनों का दोहन के कारण प्रकृतिक संतुलन बिगड़ता जा रहा है; जिसके कारण जैव विविधता का उ्हास हो रहा है। आतंकवाद, प्रजातंत्र का अर्थतंत्र, वंशवाद का दंश के कारण भ्रष्टाचार की समस्या पैदा हो गई जिसे जड़ से खत्म करना होगा। पहले मनुष्य प्राकृतिक संसाधनों-पशु-पक्षियों की महिमा का बखान करता था, मगर आज उनकी दीन-दुर्दशा देख-देख आँखों में पानी आ रहा है। इसके लिए मनुष्य को अपने पूर्वजों की तरह परहित में ही अपना जीवन बीताना होगा। बदलते समय के साथ नयी सदी के स्वर की कविताएँ नए विचार और नई समस्याओं को लेकर जरूर प्रस्तुत होती है मगर उसका समाधान भी देती है।

मुख्य शब्द: कन्या भ्रण हत्या, श्रमिक समस्या, भूखमरी की समस्या, भ्रष्टाचार की समस्या, पर्यावरण की समस्या, शोषण की समस्या आदि।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

डॉ. दीपक रामा तुपे. (2026). नयी सदी के स्वर में चित्रित समस्यामूलक विमर्श. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 177 - 183. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22785922>



प्रस्तावना:

हीरालाल मिश्र 'मधुकर' द्वारा संपादित 'नयी सदी के स्वर' की कवितायें न किसी झंडे का समर्थन करती है और न किसी खोखली प्रतिष्ठा का समर्थन करती है जबकि इसमें वर्तमान परिवेश के विविधांगी स्वर मुकरित हो रहे हैं। ये कविताएँ अपने युग की युगीन चेतना, युगीन स्वर और युगीन समस्याओं को बड़ी बेबाकी के साथ उजागर करती है; जो पाठकों को गहराई से सोच-विचार करने के लिए बाध्य करती है। बढ़ता शहरीकरण, भूखमरी, राजनीतिक तिकड़मबाजी, अवसरवादिता, उपभोक्तावादी संस्कृति, बाजारवाद, विखंडनवाद, बढ़ता प्रदूषण आदि समसामयिक समस्याओं को लेकर नयी सदी के स्वर के कवि चिंतित नजर आते हैं। इन कविताओं में कई समस्याओं को उजागर किया है; जिसके केंद्र में मानवता है। "जिस प्रकार सामवेद में ज्ञानयोग, कर्मयोग और भक्तियोग की त्रिवेणी है, उसी प्रकार 'नयी सदी के स्वर' काव्य संग्रह में काव्य की विविध विधाओं का समावेश है। अनय, अनैतिकता के विरुद्ध आवाज देने का प्रयास एवं मानवीय मूल्यों के संरक्षण का विधान है तथा अनुभूति में डूबी हुयी प्रतिभा का अप्रतिम प्रवाह है।" उक्त कथन से स्पष्ट होने में देर नहीं लगती कि 'नयी सदी के स्वर' काव्य संग्रह में अनय एवं अनैतिकता के विरुद्ध की आवाज है; जो सामाजिक सरोकार को दर्शाती है। प्रस्तुत काव्य संकलन में विविध समस्यामूलक विमर्शों की पहल की गई है; जो सामाजिक परिवर्तन की पूरजोर हिमायत करती है-

शोध के उद्देश्य:

1. नयी सदी के स्वर में निहित समस्याओं को खोजना।

2. नयी सदी के स्वर में निहित मजदूर, कन्या भ्रूण हत्या, भूखमरी, भ्रष्टाचार, शोषण, पर्यावरण की समस्याओं का विवेचन करना।
3. नयी सदी के स्वर में चित्रित समस्याओं के कारणों को तलाशना।
4. नयी सदी के स्वर में संकलित कविता और समस्याओं का अंतःसंबंध खोजना।

शोध पद्धति:

यह शोध गुणात्मक, विवेचनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। शोध विषय का गहराई से अध्ययन करने हेतु प्राथमिक एवं द्वितीय स्रोतों का उपयोग किया है। प्राथमिक 'स्रोतों में नयी सदी के स्वर' कविता संग्रह की कविताएँ शामिल है। द्वितीय स्रोतों में संदर्भ ग्रंथ, शोध पत्र, पत्र-पत्रिका एवं साहित्यिक ग्रंथों का आधार लिया गया है। वर्णनात्मक, विवेचनात्मक एवं विश्लेषण पद्धति के माध्यम से नयी सदी के स्वर और संस्कार, माँ की ममता, मानवीय संवेदना, सद् इच्छा, सत्कर्म, पारस्परिक सद्भाव, एकात्म भाव आदि का साहित्यिक विश्लेषण किया है।

विषय-विवेचन:

कन्या भ्रूण हत्या:

हमारे देश में पितृसत्ताक सामाजिक व्यवस्था है। इसलिए समाज में यह धारणा है कि वंश चालने के लिए कुल का दीपक चाहिए। दहेज प्रथा और आर्थिक असुरक्षा के कारण गर्भ में पल रही बच्ची की हत्या की जाती है। कन्या भ्रूण हत्या केवल अपराध नहीं है बल्कि यह एक समाज की मानसिकता पर लगा कलंक है। गर्भ में हो रही कन्या भ्रूण हत्या को लेकर



चिंता जताते हुए सूर्य नारायण गुप्त 'सूर्य' अपने 'हाइकु' में लिखते हैं-

“गर्भ में आती
जब भी भ्रूण कन्या
मार दी जाती।”²

कहना आवश्यक नहीं कि हमारा समाज नैतिक, सामाजिक और कानूनी दृष्टि से पतन की राह पर अग्रेसर है। कन्या भ्रूण हत्या के परिणामस्वरूप ही समाज का लिंगानुपात बिगड़ता जा रहा है। समाज में स्त्री-पुरुष का संतुलन बिगड़ता जा रहा है। सामाजिक संरचना ध्वस्त होती जा रही है। एक ओर मनुष्य ने चिकित्सा क्षेत्र में काफी प्रगति की है तो दूसरी ओर अल्ट्रासाउंड जैसी वैज्ञानिक तकनीक के जरिए भ्रूण का लिंग परीक्षण कर गर्भपात किया जाता है। बेटा है तो उस भ्रूण को रखा जाता है। इसमें डॉक्टर की भरपूर कमाई हो रही है, मगर मातृ शक्ति दिन-ब-दिन कम होती जा रही है। मानव रचित विधान प्रणाली अपनी ही जड़ को कुतरती जा रही है। रमा शंकर सिंह अपनी 'बेटी बचाओ' कविता में इन्हीं स्थितियों का जिक्र मिलता है -

“अब गर्भ में भ्रूण परीक्षण में ही, लिंग परीक्षण हो जाता,
बेटी जो रही तो मार दिये, बेटा जो रहा तो रह जाता,
भरपूर कमाई डॉक्टर की, पर मातृ शक्ति तो घट ही रही है,
मनव-रचित विधान प्रणाली, अपनी जड़ को कुतर रही है।”³

स्पष्ट है कि कन्या भ्रूण हत्या के कारण समाज का स्त्री-पुरुष संतुलन बिगड़ता जा रहा है। सरकार ने इस कुप्रथा रोकने के लिए कड़े कानून बनाए हैं और बेटी बचाओ, बटी पढ़ाओ, लाइली बहन योजना जैसे अभियान चलाए हैं, मगर कानून से समस्या का समाधान नहीं होता। इसके लिए सामाजिक सोच में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। बेटी बोझ नहीं बल्कि हमारी सामाजिक, राजनीतिक, खेल, शिक्षा,

विज्ञान आदि क्षेत्रों में देश का नाम रोशन कर रही है। समाज की बेटी को बोझ समझने की मानसिकता में जब तक परिवर्तन नहीं होता तब तक स्त्री को समानाधिकार और सम्मान नहीं मिलेगा।

श्रमिक समस्या:

श्रमिक देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। मजदूर खेत-खलिहान, कल-कारखाने, उद्योग, निर्माण कार्य और हर उत्पाद क्षेत्र में अपना योगदान देते हैं; जिसकी बदौलत राष्ट्र का निर्माण हो रहा है, लेकिन विडंबना बात यह है कि इन्हीं मजदूरों को अधिकाधिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। सबके मकान मजदूर ही बनवाते हैं, मगर उन्हें खुद को रहने के लिए अच्छा मकान नहीं मिलता। हमारे राजनेता मजदूरों को हर सुविधा देने की घोषणा करते हैं, मगर वह पूरी नहीं करते। परिणामस्वरूप मजदूरों का जीवन जस का तस बन हुआ है। सुशील राकेश लिखित 'मजदूरों की महकती शाम' कविता में इसी स्थिति का जिक्र मिलता है -

“भरे शब्दों में कहा मकान मिलेगा
सब को हर सुविधा हाजिर होगी
मजदूरों का डिजिटल होगा जीवन
सड़क बिल्कुल रूक गयी थी
नेता लाल दुपट्टे में टमाटर था
बस बड़े खुश रहे मजदूरों की महकती शाम
कल क्या होगा जैसे पपड़िया पनियाँ की तरह
जैसे है वैसे ही रहेंगे मजदूर
बस एक शाम करिया चाँद के साथ
महकती खुशबू छा गयी।”⁴

स्पष्ट है कि मजदूर-मजदूरन रोजी-रोटी के लिए हर किस्म का काम करते हैं, मगर हमारे नेता मजदूरों का उपयोग अपनी सभा सजाने के लिए करते हैं। मजदूरों की सभा में वे



मजदूरों के विकास, मकान दिलाने, उन्हें डिजिटल बनाने की घोषणा करते हैं। उतने समय के लिए मजदूरों की शाम महकती है, लेकिन कल पपड़ियाएँ पनियों की तरह मजदूर जस के तस रह जाते हैं। सुविधा के नाम पर उन्हें कुछ नहीं मिलता। राजनेता केवल घोषणाबाजी करते हैं, मगर मजदूरों की जिंदगी में बदलाव नहीं लाते। मजदूरों का पसीना ही देश के विकास की नींव है। मजदूरों का जीवन स्तर सुधारे बिना किसी राष्ट्र का समग्र विकास असंभव है।

भूखमरी की समस्या :

भूखमरी मानव जीवन की सबसे पीड़ादायक और गंभीर समस्या है। हमारे देश में हर व्यक्ति को दो वक्त का खाना नहीं मिलता। कई बच्चे कुपोषण के शिकार हो रहे हैं। पेट की आग बुझाने के लिए वे खुद के शरीर पर कोड़े बरसाते हैं। बच्चों का बिलबिलाना किसी माँ को देखा नहीं जाता। इसलिए बच्चों के पेट की आग बुझाने के लिए औरत शर्म-ओ-हया हो रही है। डॉ. राम गरीब पांडेय 'विकल' लिखित 'अनियारी हवा' कविता में इन्हीं स्थितियों का जिक्र मिलता है। स्वयं कवि के शब्दों में -

“मर्सिया था या कि लोरी, पर उसे गाना ही था,

रात भर वह दुधमुँह का, पेट सहलाती रही।

पेट की खातिर वो खुद पे कोड़े बरसाता रहा,

और हमको उसकी, यह बर्बर अदा भाती रही।

बिलबिलाना भूख से बच्चों का, कब तक देखती,

धीरे-धीरे उसकी सब शर्म-ओ-हया जाती रही।”⁵

कहना आवश्यक नहीं कि रोटी, कपड़ा और मकान हर नागरिक का मूल अधिकार है। जब तक हर व्यक्ति को दो जून का खाना नहीं मिलता तब तक देश का विकास सच्चे अर्थ में अधूरा है। भूखमरी की समस्या केवल शारीरिक स्वास्थ्य तक

सीमित नहीं है जबकि सामाजिक एवं मानसिक विकास को भी प्रभावित करती है। परिणामी भूख के कारण औरत शर्म ओ हया हो रही है।

पर्यावरण की समस्या:

वस्तुतः पर्यावरण की समस्या समग्र विश्व के सामने एक गंभीर चुनौती के रूप में खड़ी हो गई है। बढ़ती आबादी, औद्योगीकरण, शहरीकरण, प्राकृतिक संसाधनों का दोहन आदि के कारण प्रकृति का संतुलन बिगड़ता जा रहा है। परिणामस्वरूप भू-प्रदूषण, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण और जैव विविधता खत्म हो रही है। पर्यावरण का दोहन जितना कम होगा उतना ही पर्यावरण का संतुलन बना रहेगा। इस संदर्भ में रेनू गौतम मन्द्रवाल अपने ‘पर्यावरणीय चुनौतियाँ, समस्या और समाधान’ आलेख में लिखते हैं-“पर्यावरण की समृद्धि ही संसार की समृद्धि है, अतः शोषण, दोहन और विषमता जितनी कम होगी पर्यावरण उतना ही समृद्ध होगा।”⁶ एक ओर मनुष्य ने यश के झंडे गाड़ दिए हैं तो दूसरी ओर मानव जीवन पर विपरीत परिणाम हो रहा है। धुआँ, धूल, चिमनी के माथे के कारण मनुष्य का दाना-पानी दूषित हो रहा है। मनुष्य ने नदियों को रोक दिया है और जंगल काट दिए हैं। मानवी तन-मन दूषित हो रहा है और कई जीव अंतिम सांसे गिन रहे हैं। डॉ. क्षमा शंकर पांडेय कृत ‘अपनी राम कहानी’ कविता में इन्हीं स्थितियों का प्रमाण मिलता है। स्वयं कवि के शब्दों में -

“धुआँ, धूल, चिमनी के माथे,

अपनी राम कहानी है।

दूषित तन-मन, दूषित जीवन,

दूषित दाना-पानी है।

अपने घर के लिए मनुज ने,

सब के भवन उजाड़े हैं।



जंगल काटे, नदियाँ बाँधी,
यश के झंडे गाड़े हैं।
ना जाने कितने जीवों की,
मिटती रही निशानी है।⁷

स्पष्ट है कि मनुष्य ने अपना मकान बनाने के लिए धरती का सब भवन उजाड़ दिया है। प्रदूषण के कारण विविध प्रकार की जैव विविधता मिटती जा रही है। उन जीवों की नाममात्र निशानी शेष है। यश के परचम लहराने हेतु मनुष्य ने जंगल की कटाई की है; जिसके कारण भवन उजड़ गए हैं। कई पशु-पक्षी दुर्लभ हो रहे हैं। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी धरती को छोड़कर जा रहे हैं। यदि मनुष्य ने धरती के साथ ज्यादा छेड़छाड़ की तो धरती पर प्रलय आएगा। इन्हीं स्थितियों का जिक्र रमा शंकर सिंह लिखित 'तितली रानी यहाँ नहीं है' कविता में मिलता है। कवि रमा शंकर सिंह के अनुसार -

“चूँ-चूँ करती गौराइयों की, घर में शोभित पंक्ति कहाँ?
और कई पशु-पक्षी ऐसे, दुर्लभ होते रहे यहाँ।
छेड़-छाड़ यदि रही प्रकृति से, मच जायेगी प्रलय यहाँ,
तितली रानी यहाँ नहीं हैं, फुलवारी से गर्यी कहाँ?”
अमृत तो चल दिये स्वर्ग को, जहर फैलते धरती पर,
औषधियाँ बेअसर हो रहीं, नये रोग अब जीवन पर।
धरती के किस कोने ढूँढ़ें, मिले शुद्ध जलवायु जहाँ,
तितली रानी यहाँ नहीं हैं, फुलवारी से गर्यी कहाँ?”⁸

स्पष्ट है कि बढ़ते प्रदूषण के कारण धरती पर नई-नई बीमारियाँ फैल रही हैं; जिसके कारण औषधियाँ भी बेअसर हो रही हैं। धरती के किसी भी कोने में शुद्ध जलवायु ही नहीं मिल रहा है। आज धरती पर हो रहे प्रदूषण के कारण पूरी धरती पर जहर फैलता जा रहा है। यदि हम प्रकृति के प्रति संवेदनशील नहीं बने और पर्यावरण सुरक्षा में योगदान नहीं दिया तो धरती का विनाश होगा।

भ्रष्टाचार की समस्या :

वर्तमान में हमारे देश में आतंकवाद, भ्रष्टाचार, अर्थाभाव और वंशवाद की समस्याओं ने अपनी गहरी जड़ें जमाई है। हर कोई अपने पद, अधिकार एवं शक्ति का दुरुपयोग स्वार्थ के लिए कर रहा है। सबदूर रिश्तखोरी, कालाबाजारी, सूदखोरी का बोलबाला है। परिणामी भ्रष्टाचार की समस्या जन्म ले रही है। योग्य व्यक्ति हाशिए पर और अयोग्य व्यक्ति मंझधर में लाया जा रहा है। परिणामस्वरूप समाज में खुलेआम भ्रष्टाचार की समस्या उजागर हो रही है। इन्हीं स्थितियों का प्रमाण राम सनेही राय लिखित 'देश की दशा' कविता में मिलता है। स्वयं कवि के शब्दों में -

“एक तरफ आतंकवाद ने,
अपने पैर जमाये,
दूजे भ्रष्टाचार ने आकर,
प्रजातंत्र का अर्थतंत्र,
अब कैसे बच पायेगा,
वंशवाद का दंश झेल,
क्या भारत बढ़ पायेगा?”⁹

स्पष्ट है कि भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए आतंकवाद, प्रजातंत्र का अर्थतंत्र, वंशवाद का दंश खत्म करना होगा तभी भ्रष्टाचार की समस्या जड़ से खत्म होगी। इसके लिए सरकार को नहीं बल्कि पूरे समाज को अपना दायित्व निभाना होगा और भ्रष्टाचारमुक्त भारत में अपना योगदान देना होगा तभी भ्रष्टाचार की समस्या खत्म होगी।

शोषण की समस्या:

भारत में नारी को पूजा जाता था। जननी धर्म निभाकर ही नारी खुद को धन्य मानती है। हमारे समाज में नारी के सतीत्व की रक्षा की जाती है। यही सतीत्व नारी का आदर्श होता है, जो



नारी का गौरव वसंत बन जाता है। इनकी शीतल छाया पाकर नर जन्म धन्य हो जाता है; मगर वर्तमान में महिलाओं पर कतिपय क्रूर अत्याचार हो रहे हैं। युग-युग से दल-बल का मांसलता पर व्याभिचार हो रहा है। नारी की अस्मिता सरेआम लूटी जा रही है। लजावती ललनाओं को अपहृत कर बेचा जा रहा है। जिस नारी ने जन्म दिया; उसी का शोषण हो रहा है। पं. उमाशंकर मिश्र 'रसेंदु' की 'दीन दुर्दशा' कविता में इन्हीं स्थितियों का प्रमाण मिलता है-

“हे मानव, हे अमर पुत्र क्यों!
उत्पीड़न-जाल बिछाते हो।
शोषण की गर्हित रक्तधार,
क्यों घर में मुदित बहाते हो।
देखो अपने उन पूर्वज को,
जो परहित में जन्म गँवाते हैं।
पूजा पशु-पंक्षी, तरु, सर की,
भू-नभ की महिमा गाते हैं।

जन क्षुब्ध हृदय अवरुद्ध कंठ, नर नग्न हुआ न लजाता है।

दीन-दुर्दशा देख-देख, आँखों में जल भर आता है।”¹⁰

स्पष्ट है कि हमारे पूर्वज पशु-पक्षी, तरु और भू-नभ की महिमा गाते थे, मगर आज का मानव नारी उत्पीड़न जाल बिछाकर शोषण की गर्हित रक्तधार का शिकार कर रहा है। नग्न होते नर को न शर्म और न हया। क्षुब्ध जन हृदय का कंठ अवरुद्ध हो रहा है। यही दीन-दुर्दशा देख-देख आँखों में पानी आ रहा है। इसके लिए मनुष्य को परहित का खयाल रखना चाहिए।

निष्कर्ष:

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कन्या भ्रूण हत्या के परिणामस्वरूप समाज में स्त्री-पुरुष का संतुलन बिगड़ता जा रहा

है। दहेज प्रथा और आर्थिक असुरक्षा के कारण गर्भ में पल रही बच्ची की हत्या की जाती है। अल्ट्रासाउंड जैसी वैज्ञानिक तकनीक के कारण कन्या भ्रूण का लिंग पहचानकर गर्भपात किया जा रहा है। इसमें एक ओर डॉक्टर की भरपूर कमाई हो रही है तो दूसरी ओर मातृशक्ति दिन-ब-दिन कम होती जा रही है। आज मजदूर-मजदूरन राजनेताओं की सभा सजाने लगी है। उसी सभा में नेता उन्हें हर सुविधा देने की घोषणा करते हैं मगर उन्हें वास्तव में कुछ नहीं मिलता। परिणामी उनका जीवन नारकीय बनता जा रहा है। कई व्यक्ति भूखमरी के शिकार हो रहे हैं। कई बच्चे कुपोषण का शिकार हो रहे हैं। पेट की आग बुझाने के लिए औरत खुद के शरीर पर कोड़े बरसाती है। भूखमरी से बिलबिलाते बच्चों को देख औरत उनके पेट की आग बुझाने के लिए अपनी इज्जत उतार रही है। बढ़ती आबादी, औद्योगीकरण, शहरीकरण, प्राकृतिक संसाधनों का दोहन हो रहा है। इसमें प्राकृतिक संतुलन बिगड़ता जा रहा है और जैव विविधता का भी ँहास हो रहा है। आतंकवाद, प्रजातंत्र का अर्थतंत्र, वंशवाद का दंश आदि के कारण भ्रष्टाचार की समस्या पैदा हो गई है; जिसे जड़ से खत्म करना होगा। पहले मनुष्य प्राकृतिक संसाधनों की महिमा का बखान करता था, मगर आज का क्षुब्ध हृदय जन का कंठ अवरुद्ध हो रहा है। यही दीन-दुर्दशा देख-देख आँखों में पानी आ रहा है। इसके लिए मनुष्य को अपने पूर्वजों की तरह परहित में ही अपना जीवन बीताना होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. हीरालाल मिश्र 'मधुकर' - नयी सदी के स्वर, नारायण प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण: 2018, मलपृष्ठ से उद्धृत।
2. वही, सूर्य नारायण गुप्त 'सूर्य', हाइकु, पृष्ठ - 300



3. वही, रमा शंकर सिंह, बेटी बचाओ, पृष्ठ - 439
4. वही, सुशील राकेश, मजदूरों की महकती शाम, पृष्ठ-230
5. वही, डॉ. राम गरीब पांडेय 'विकल', अनियारी हवा, पृष्ठ-446
6. <https://doi.org/10.51220/hjssh.v17i1.11>
7. वही, डॉ. क्षमा शंकर पांडेय, अपनी राम कहानी, पृष्ठ-352
8. वही, रमा शंकर सिंह, ततली रानी यहाँ नहीं है, पृष्ठ-438
9. वही, राम सनेही राय, देश की दशा, पृष्ठ-318
10. वही, पं. उमाशंकर मिश्र 'रसेंदु' -दीन दुर्दशा, पृष्ठ-217